हिम्मत

जो हिम्मत ना थी आग से खेलने की,
तो फूंका क्यों
इस बुझते हुए अंगारे को ?

चिंगारियां ही हो जिनका मकसद,
हक नहीं है उन्हें
शोले भड़काने का !

जो साहस न था गहराई नापने का,
तो टटोला क्यों
मेरे दिल की तनहाई को ?

तालाब ही हो जिनकी सीमा,
हक नहीं है उन्हें
महासागर में डुबकी लगाने का !

जो ना था हौसला समीक्षा का,
तो कहा था क्यों
कविता एक रचाने को ?

श्रृंगार ही हो जिनका मकसद,
हक नहीं है उन्हें
दर्पण को उकसाने का !

- राजीव नंदा